# रहीम के दोहे

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

## अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» कवि परिचय -- रहीम और उनकी दोहा-शैली

» दोहा: सुई और तलवार -- हर किसी का अपना महत्व

» दोहा: पेड़-तालाब -- परोपकार की भावना

» दोहा: प्रेम का धागा -- रिश्तों को सहेजना

» दोहा: पानी रखिए -- सम्मान और शब्द के अनेक अर्थ

» दोहा: विपत्ति की कसौटी और वाणी पर नियंत्रण

## हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

**उदाहरण 1. रहीम के दोहों की भाषा-शैली की क्या विशेषताएँ हैं?**

› उन्होंने अवधी और ब्रजभाषा दोनों में रचनाएँ लिखीं
› विषय के रूप में नीति, भक्ति और प्रेम को चुना
› बहुत कम शब्दों (दो पंक्तियों) में गहरी सीख देना उनकी खासियत रही

**उत्तर – रहीम के दोहे अवधी और ब्रजभाषा में लिखे गए हैं, जिनमें नीति, भक्ति और प्रेम की बातें बहुत ही कम शब्दों में गहराई से कही गई हैं।**

**उदाहरण 2. 'जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि' पंक्ति का भावार्थ बताएं।**

› सुई का काम है सिलाई करना, जोड़ना
› तलवार का काम है काटना, बड़ा प्रहार करना
› जहाँ सिलाई जैसा नाज़ुक काम हो, वहाँ भारी तलवार बेकार है, सुई ही काम आएगी

**उत्तर – इसका भावार्थ है कि हर वस्तु या व्यक्ति की अपनी अलग उपयोगिता होती है -- जो काम एक छोटी सुई कर सकती है, वह बड़ी तलवार नहीं कर सकती, इसलिए किसी को छोटा समझकर नकारना नहीं चाहिए।**

**उदाहरण 3. पेड़ और तालाब के उदाहरण से रहीम कौन-सी सीख देना चाहते हैं?**

› पेड़ फल देता है पर खुद नहीं खाता -- दूसरों के लिए
› तालाब पानी रखता है पर खुद नहीं पीता -- दूसरों के लिए
› इसी तरह समझदार इंसान भी संपत्ति दूसरों की भलाई के लिए जोड़ता है

**उत्तर – रहीम सिखाते हैं कि सच में समझदार (सुजान) लोग अपनी संपत्ति और साधन दूसरों की भलाई के लिए इस्तेमाल करते हैं, सिर्फ़ अपने स्वार्थ के लिए नहीं।**

**उदाहरण 4. दोहे में प्रेम की तुलना धागे से क्यों की गई है?**

› धागा एक बार झटके से टूटने पर आसानी से नहीं जुड़ता
› अगर जोड़ा भी जाए, तो बीच में गाँठ पड़ जाती है, जो पहले जैसा सहज रूप नहीं रहने देती
› प्रेम/रिश्तों में भी ऐसा ही होता है -- झटके से तोड़ने पर निशान (दूरी) बाकी रह जाता है

**उत्तर – प्रेम की तुलना धागे से इसलिए की गई है क्योंकि जैसे टूटा हुआ धागा जुड़ने पर भी गाँठ छोड़ जाता है, वैसे ही टूटा हुआ रिश्ता जुड़ने पर भी पहले जैसा सहज नहीं रहता -- इसलिए रिश्तों को सहेजकर रखना चाहिए।**

**उदाहरण 5. इस दोहे में 'पानी' शब्द के तीन अर्थ कौन-कौन से हैं?**

› मोती के संदर्भ में 'पानी' का अर्थ है चमक
› मनुष्य के संदर्भ में 'पानी' का अर्थ है सम्मान/इज़्ज़त
› चून (आटे) के संदर्भ में 'पानी' का अर्थ है असली जल

**उत्तर – इस दोहे में 'पानी' शब्द के तीन अर्थ हैं -- मोती के लिए चमक, मनुष्य के लिए सम्मान, और आटे के लिए जल।**

**उदाहरण 6. 'रहिमन जिह्वा बावरी...' दोहे का भाव क्या है?**

› जीभ को 'बावरी' यानी पागल कहा गया है क्योंकि वह बिना सोचे कुछ भी बोल देती है
› जीभ खुद तो मुँह के अंदर सुरक्षित रहती है
› पर उसकी लापरवाह बोली का नतीजा (जैसे किसी की मार या नुकसान) पूरे इंसान (सिर/कपाल) को भुगतना पड़ता है

**उत्तर – इस दोहे का भाव है कि हमें सोच-समझकर बोलना चाहिए, क्योंकि लापरवाही से बोली गई बात का नुकसान बोलने वाले को ही भुगतना पड़ता है।**

## बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• कवि परिचय में नाम, काल (भक्तिकाल), भाषा (अवधी-ब्रजभाषा) और विषय (नीति-भक्ति-प्रेम) चारों बातें लिखना ज़रूरी है।
• इस दोहे का भावार्थ लिखते समय हमेशा दोनों उदाहरण (सुई का काम + तलवार का काम) साथ में लिखें, तभी उत्तर पूरा माना जाता है।
• 'पर काज हित' शब्दों का अर्थ (दूसरों की भलाई के लिए) परीक्षा में ज़रूर पूछा जा सकता है।
• 'छिटकाय' और 'गाँठ परि जाय' शब्दों का सही अर्थ (झटके से/जोड़ पर निशान) परीक्षा में स्पष्ट लिखें।
• 'शब्द एक अर्थ अनेक' वाले प्रश्नों में हमेशा हर अर्थ के साथ यह भी बताएं कि वह किस संदर्भ (मोती/मनुष्य/चून) में प्रयोग हुआ है।
• 'सोच-समझकर बोलना चाहिए' यह भाव सीधे दोहे के प्रश्न में विकल्प के रूप में भी पूछा गया है -- ध्यान से चुनें, 'सच बोलना' अलग बात है, 'सोच-समझकर बोलना' यहाँ का सही भाव है।

## एक नज़र में रिवीज़न

› रहीम (अब्दुर्रहीम खानखाना) - भक्तिकाल कवि, अवधी-ब्रजभाषा में नीति/भक्ति/प्रेम पर दोहे।
› सुई और तलवार दोनों का अपना-अपना काम -- किसी को छोटा समझकर नकारना गलत है।
› पेड़-तालाब स्वयं उपभोग नहीं करते, दूसरों के काम आते हैं -- सुजान भी संपत्ति परोपकार के लिए जोड़ते हैं।
› प्रेम = धागा; झटके से टूटने पर गाँठ पड़ जाती है (रिश्ते में दूरी रह जाती है) -- इसलिए रिश्ते सहेजकर रखने चाहिए।
› 'पानी' के तीन अर्थ (चमक/सम्मान/जल); सीख: सम्मान बचाकर रखना सबसे ज़रूरी।
› थोड़ी मुसीबत भली (सच्चे-झूठे की पहचान होती है); जीभ बावरी है, इसलिए सोच-समझकर बोलना चाहिए।